

---

# Keshadipada Shravanamritam

---

## केशादिपादश्रवणामृतम्

---

### Document Information

Text title : Keshadipada Shravanamritam

File name : keshAdipAdashravaNAmRRitam.itx

Category : vishhnu, vAsudevanElayath, krishna

Location : doc\_vishhnu

Description/comments : From Bhaktitarangini by Prof. P.C. Vasudevan Elayath

Latest update : December 25, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 25, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

केशादिपादश्रवणामृतम्



शबलशिखण्डिशिखण्डमण्डितहाटकरत्नकिरीट, हरे,  
विलुलितमञ्जुतरालकरञ्चितमञ्जुलफालककान्तिनिधे ।  
मुरहर, कुङ्कुमसङ्कलनाङ्कितपुण्ड्रकमण्डनहास, हरे,  
जय जय हे गुरुवायुपुरेश्वर, भक्तमहेश्वर, विश्वपते! ॥ १ ॥

ललितविलासविशेषविमोहनचिल्लि, दयामृतसललहरी-  
लुलितविभङ्गमभङ्गुरभङ्गि, तवाङ्गविलोलविलोचनकम् ।  
मिलितलसन्मणिकुण्डलमण्डितगण्डतलञ्च सदा कलये  
जय जय हे गुरुवायुपुरेश्वर, भक्तमहेश्वर, विश्वपते! ॥ २ ॥

तिलकुसुमोपमनासिकया परिशोभितमाननतामरसं  
विकसितकुन्दविहासिविहासलसन्मधुराधरकान्ततरम् ।  
मुनिजनमानसंहसनिरन्तरसेवितमन्तरुदेतु सदा  
जय जय हे गुरुवायुपुरेश्वर, भक्तमहेश्वर, विश्वपते! ॥ ३ ॥

कलमुरलीमधुरश्रवणामतपूरकपूरककम्बुवरं  
ललिततनो तव कण्ठमकुण्ठमनोहरहारविहारपदम् ।  
गलितभवज्वरतान्तिभरे हृदि शान्तिधरे कलयेय हरे;  
जय जय हे गुरुवायुपुरेश्वर, भक्तमहेश्वर, विश्वपते! ॥ ४ ॥

विपुलमिदं वनमालिकयाऽञ्चितमञ्जनवर्ण, सुवर्णमणी-  
महितविभूषणभूतितपावनवत्सविशोभितवत्सपदम् ।  
मनसि चकास्तु मुनिस्तुतविस्तृतकौस्तुभनिस्तुलफान्तियुतम् ।  
जय जय हे गुरुवायुपुरेश्वर, भक्तमहेश्वर, विश्वपते! ॥ ५ ॥


कमलगदारिदराङ्कितदोष्कचतुष्कवितीर्णपुमर्थतते,  
कुशभुदरे निखिलाण्डनिधानमखण्डमहाद्भुतमाकलये ।  
अनलसुतप्तसुवर्णसवर्णनवाम्बरसुन्दररूप, हरे;  
जय जय हे गुरुवायुपुरेश्वर, भक्तमहेश्वर, विश्वपते! ॥ ६ ॥

पृथुकदलीमृदुलोरुवरं, पुरषार्थसमुद्रकजानुयुगं  
शिखिगलकोमलजङ्घभृषीश्वरनम्यनवाम्बुजरम्यपदम् ।  
अयि नरकान्तक, कान्तमिदं तव रूपमनन्त, हृदि स्फुरतादुः  
जय जय हे गुरुवायुपुरेश्वर, भक्तमहेश्वर, विश्वपते! ॥ ७ ॥


जय जय दुर्जयनिर्जरवैरिजयार्जितनिर्जरकीर्तितते ।  
जय जय वञ्जुलमञ्जुनिकुञ्जसमजसखेलनलोलमते ।  
जय जय धर्मसमुद्धरणोद्धुर, शर्मविधायककर्मगुरो,  
जय जय हे गुरुवायुपुरेश्वर, भक्तमहेश्वर, विश्वपते! ॥ ८ ॥

इति श्रीवासुदेवन् एलयथेन विरचितं केशादिपादश्रवणामृतं सम्पूर्णम् ।

---

——  
*Keshadipada Shravanamritam*

pdf was typeset on December 25, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

